ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
एक ऐसी जीवनपद्धति है
जो किसी जीव को, चाहे वो
भूमि, जल अथवा वायु का हो
भय, पीड़ा अथवा मृत्यु नहीं पहुँचाती

वर्ष 13 अंक 4, शिशिर 2023

करुणा-मित्र

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी – भारत की पत्रिका
प्राणी अधिकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक धर्मार्थ ट्रस्ट

संपादकीय

नेपाल के राजदेवी मंदिर में विजयादशमी के पूर्व 15,000 से अधिक बकरियों की कुरबानी

पशुओं का वध स्थानीय श्री महावीर युवा समिति के द्वारा आयोजित किया जाता है, जिसके लिये वह प्रति मुलाकाती 200 रूपये का शुल्क वसूलती है।

इस वर्ष 2023 की अष्टमी रविवार को और नवमी सोमवार को थी। विजयादशमी के दो दिन पूर्व 15 अक्तूबर 2023, रविवार की रात 8 बजे बकरियों का क़त्ल शुरू हुआ। यह सिलसिला 16 अक्तूबर, सोमवार को प्रातःकाल 4 बजे तक बिना रुके चलता ही रहा। नेपाल और भारत के हज़ारों भक्तगण इस कत्लेआम में विधिवत् सम्मिलित हुए। इस दौरान 15,251 बकरियों का क़त्ल हुआ। इनमें से 50% बकरियां भारतीय भक्तगण साथ में लाये थे। यह जानकारी सोमवार को मंदिर के पदाधिकारी ने दी। हमारे यहाँ जिसे हम दशहरा का उत्सव कहते हैं, नेपाल में इसे दशैन पर्वमाला के नाम से जाना जाता है।

दुर्भाग्यवश, इस पूरे आयोजन का उत्तरदायित्व जनकपुर, नेपाल स्थित स्थानीय श्री महावीर युवा समिति के ऊपर रहता है। श्री महावीर नाम सुनकर यह भ्रान्ति होती है कि यह संस्था जैनियों से जुडी हो सकती है। परन्तु, इसमें कोई भी जैन मतावलंबी शामिल नहीं है। इस समिति का नामकरण भ्रमित करने वाला एवं जैन धर्म को बदनाम करने वाला है। हम इस पर अपनी कड़ी आपत्ति जताते हैं।

पशु बलि के लिए राजदेवी माता मंदिर के बाहर लंबी कतार।
तसवीर सौजन्य: **theannapurnaexpress.com**

भारत में भी इन दिनों नवरात्रि / दुर्गा पूजा के पर्व के भाग रूप पशु-बलि चढ़ाया जाता है। महानवमी को माता दुर्गा की महिषासुरमर्दिनी के रूप में पूजा की जाती है। तात्पर्य यह कि भैंसासुर अर्थात् महिषासुर के वध को शुभ के अशुभ पर विजय के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

असम बेलसोर स्थित बिलेश्वर देवालय में हज़ारों भक्तों की उपस्थिति में नवमी के दिन भैंसों का वध होता है।

महानवमी के दिन बिहार के पटना विश्वविद्यालय के परिसर में दरभंगा हाउस में स्थित कालि मंदिर में पशुवध के दर्शन करने के लिये आये हुए हज़ारों हिन्दू भक्तों के समक्ष बलि चढाई जाती है।

अगरतला (त्रिपुरा) के रॉयल दुर्गा बाड़ी महानवमी पूजा की पूर्वसंध्या पर बलिप्रथा के अनुसार भैंसों का वध किया जाता हैं। राजस्थान के चित्तोड़गढ़ में सैंकड़ों ग्रामजनों के समक्ष महानवमी के अवसर पर कालि माता को प्रसन्न करने हेतु पशुबलि चढाई जाती है।

इस प्रकार धर्म के नाम पर और देवी को प्रसन्न करने के प्रयोजन से प्रतिवर्ष विजयादशमी के अवसर पर भारत और नेपाल में मासूम, निरीह प्राणियों की बलि प्रतिवर्ष चढाई जाती हैं। हम प्रण करें कि प्राणीसंहार के इस घिनौने खेल को रोकें और उसे न होने देने के लिये कटिबद्ध हों।

बेलसोर स्थित बिलेश्वर देवालय में हज़ारों भक्तों की उपस्थिति में नवमी के दिन भैंसों का वध। *तसवीर सौजन्य:* **indiatoday.in**

भरत कापडीआ
संपर्क: *editorkm@bwcindia.org*

आयुर्वेदिय दवाइयों में प्राणिज घटक

प्रारंभ में Council for Research in Ayurveda Siddha (काउन्सिल फॉर रिसर्च इन आयुर्वेद एण्ड सिद्ध) थी। कई वर्ष पश्चात्, 1995 में Department of Indian System of Medicine and Homeopathy (ISMH) का गठन हुआ। 2003 में उसका नामपरिवर्तन हुआ, Department of Ayurveda, Yoga and Naturopathy, Unani, Siddha and Homeopathy (AYUSH) 2014 में यह व्यवस्था आयुष मंत्रालय के रूप में स्थापित हुई।

इस पूरे नाम में सर्वप्रथम प्रणाली आती है, वह है आयुर्वेद, जिसका अर्थ है जीवन का विज्ञान। राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस प्रतिवर्ष धन्वन्तरी जयंती के रोज़ मनाया जाता है, जोकि, दीपावली के दो दिन पूर्व धनतेरस को आयोजित होती है।

आयुर्वेदिय औषधियां सदैव शाकाहारी होती है, यह मिथ्या धारणा (गलतफहमी) है। वर्तमान में 50 ऐसी विभिन्न दवाइयाँ हैं, जिनमें प्राणिज घटक समाविष्ट हैं, 52 दवाइयों में खनिज घटक समाविष्ट हैं और 600 में पौधे और जड़ीबूटियों के घटक समाविष्ट हैं।

एक समय था, जब, हिरण के सिंग से लेकर लोमड़ी या मगर का मांस आयुर्वेदिय औषधियाँ और उनके पूरक बनाने में धड़ल्ले से प्रयुक्त होते थे। सरकार के द्वारा उनके प्रयोग को प्रतिबंधित किये जाने के पश्चात् अत्यल्प मात्रा में चोरीछुपे से प्रयुक्त होते हैं। उनका आयात भी होता है।

चरक संहिता (आयुर्वेद विषयक संस्कृत में विशद रूप से प्रमाणित ग्रन्थ) में रोगोपचार के लिये 150 से 200 प्राणियों के प्रयोग के लिये अनुशंसा की गई है। कुछेक उपचार निम्नानुसार हैं : अनिद्रा के उपचार हेतु – उल्लू के जलते हुए पंख, नाखून और चमड़ी का धुआं, टीबी–तपेदिक के उपचार के लिये उल्लू का मांस, बिल्ली, नेवला, सियार (खरगोश के भेष में) सांप (ईल नामक मछली के भेष में), कौए (तितर के भेष में) का मांस, अत्यधिक रक्तस्राव के इलाज़ के लिये बकरी का मांस या खून। शेर, भालू और बाघ का खून भी बहुत शक्तिदायी औषधों की सूची में आता है। ताज़ा काटी गई मछली, मछली का तेल, अंडे, अंडे का कवच, हिरण के सिंग, कपोत का खून, तितर का मांस, बकरी के खून और मांस के अतिरिक्त निम्नलिखित का भी आयुर्वेदिय दवाइयों में प्रयोग होता है।

आयुर्वेदिक दवाई	स्रोत
एम्बर	एम्बरग्रीस स्पर्म व्हेल
अमृत प्राश घृत	घी में बकरी का मांस
अजमांसा रसायन	बकरी का मांस
अश्वगन्धादि लेह्य	बकरी के मांस समेत अश्वगन्धा
बृहत् चागल्यादि घृत	बकरी का मांस
चुक्कुमथीपलादि गुलिका	हिरण के सिंग और बिलाव कस्तूरी का वीर्य
धन्वन्तर गुलिका	सिविट–बिलाव कस्तूरी का वीर्य
गन्धमार्जार वीर्य	सिविट–बिलाव कस्तूरी का वीर्य
गोदही (तक्र)	गाय के दूध का दही
गोघृत (घृत)	गाय के दूध से बना घी
गौमूत्र	गाय का मूत्र
गोरोचन/गोरोचनादि	बैल/गाय का पित्त
कामदुधा रस	शंख का कवच
कपर्दिका भस्म	कौड़ी
कुक्कुंडात्वक भस्म	अंडे के कवच/छिलके

आयुर्वेदिक दवाई	स्रोत
लाक्षा	लाख
मधु	शहद
महा स्नेहा	प्राणी का मांस और चर्बी
महामाश तैलम्	बकरी का मांस
मथला रसायनम	बैल/गाय का पित्त
मयूरपिच्छ (पिलिक्कामु)	मोर के पंख
मृगमदासव (कस्तूरी)	हिरण की कस्तूरी
मुक्ता भस्म/पिष्टी	मोती वाला कस्तुरा–पर्ल ओय्स्टर
नवरत्न राजा मृगांक रस	मोती एवं मूंगा समेत 9 रत्न
प्रवाल (पाविज़ा)	मूंगा
रसायनम	बैल/गाय का पित्त
समुंदरफन	समुद्रफेनी मछली की हड्डी
शंख भस्म/वटी	शंख का कवच
श्रृंग भस्म	हिरण के सिंग
सिक्त	मधुमोम
वर्तिका	कौड़ी
वायु/कस्तुर्यादि गुलिका	हिरण की कस्तूरी

आयुर्वेदिय औषधों के निर्माताओं को अपने फोर्म्युलेशन से संबंधित राज्य सरकार के औषधि नियंत्रण प्राधिकरण से अनुमति लेना और उसके लिये लाइसंस लेना आवश्यक है। हालांकि, उन्हें दवाई के लेबल के ऊपर दवाई के घटकों की सूची लिखनी चाहिये, परन्तु, उनके लिये उत्पाद के ऊपर शाकाहारी उत्पाद होने विषयक हरा या मांसाहारी उत्पाद होने विषयक ब्राउन (भूरा) चिह्न लगाना अनिवार्य नहीं है। अत: शाकाहारियों के लिये उचित होगा कि वे दवाई के घटकों की लम्बी सूची ध्यान से पढ़कर जांच लें कि उसमें कोई प्राणिज या खनिज घटक है या नहीं। उदाहरणस्वरूप, पतंजलि आयुर्वेद का बादाम पाक आयुर्वेदिय संघटकों के तहत आयुर्वेदिय दवाई और खाद्य पूरक में वर्गीकृत होता है, जिसमें मोती वाला कस्तुरा–पर्ल ओय्स्टर–समुद्री जीव (mytilus margretiferus) समाहित है, तथापि उसके उपर शाकाहारी हरा चिह्न प्रदर्शित किया जाता है। बचके रहिये।

होम्योपेथिक उत्पादों में प्राणिज घटक

प्रति वर्ष 10 अप्रैल को होम्योपेथी के सर्जक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सेमुअल हेनमान के जन्मदिवस (1755–1843) के सम्मान में विश्व होम्योपेथी दिवस मनाया जाता है।

होम्योपेथिक गोलियां शुद्ध शक्कर से बनती हैं, जबकि पाउडर में लेकटोज़ (दूध में से प्राप्त शक्कर) समाविष्ट है। गोलियों और पाउडर दोनों में प्राणिज घटक हो सकते हैं, परन्तु, उनका प्रतिशत अतीव कम होगा, उदा. केवल एक काक्रोच से पोटेन्सी (होम्योपेथिक दवाई की प्रभावकारिता) की लाखों बोतलें बनती हैं। सामान्यतया बड़े प्राणियों की अपेक्षा छोटे जीवजंतुओं को हानि पहुंचाई जाती है, जिनका खून या दूध प्रयुक्त होता है।

होम्योपेथी 'कम ही ज्यादा है' के सिद्धांत अनुसार कार्य करती है जहाँ पर X, C एवं M रोमन अंक हैं, जोकि यह दर्शाते हैं कि उत्पाद की प्रभावकारिता या उसे कितनी बार द्रवित कर पतला किया गया है। अत: X अर्थात्, घटक को 10 बार C अर्थात्, 100 बार और M अर्थात्, 1000 बार द्रवित कर पतला किया गया है। संक्षेप में, जितनी अधिक पोटेन्सी (प्रभावकारिता), उतनी कम उसमें उक्त घटक की मात्रा होगी।

प्राणिज घटक समाविष्ट होम्योपेथिक उत्पादों की सूची निम्नानुसार है, जोकि सम्पूर्ण नहीं है। प्रति वर्ष खून, पंख, दूध, आदि सामग्रियों को प्रयुक्त कर नई दवाइयाँ विकसित की जाती हैं। होम्योपेथी की विशेषता है कि उसकी दवाइयाँ रोगविशेष के अनुसार लागू नहीं होती हैं, परंतु, रोगी की समग्र प्रकृति के अनुसार लागु होती है, उत्पाद का औषधीय प्रयोग परिवर्तित हो सकता है, इस लिये समग्र सूची नहीं दी जा सकती है।

होम्योपेथिक दवाई	स्रोत
Ambra grisea	स्पर्म व्हेल से प्राप्त एम्बरग्रीस
Anthracinum	एन्थ्रेक्स विष
Apis	शहद
Aranea diadema	क्रास स्पाइडर
Astacus fluviatilis	क्रॉ फिश नामक मछली
Blatta orientalis	भारतीय काक्रोच
Bufo	विषैले मेंढक की ग्रंथि से प्राप्त ज़हर
Cantharis	स्पेनिश मक्षिका
Castor Equi	घोड़े के खुर
Castoreum	उदबिलाव के शिश्नमुंड कोष का स्राव
Cenchris Contortrix	कोपरहेड सर्प का विष
Chenopodi glauci aphis	प्लान्ट लाइस – पादप लीस
Cimex acanthia	खटमल
Coccinella septempunctata	लेडीबर्ड – इन्द्रगोप
Coccus cacti	काचनील – किरीमदाना
Corallium rub	मूंगा
Crotalus horridus	रेटल–स्नेक सांप का विष
Doryphora	कोलोराडो आलू के कीड़े
Elaps corallinus	ब्राज़ीलियन कोरल स्नेक का विष
Fel tauri	बैल का पित्ताशय
Formica rufa	चींटियाँ

होम्योपेथिक दवाई	स्रोत
Hydrophobinum	बावले कुत्ते की लार
Lac caninum	कुत्ते का दूध
Lachesis	सुरुकुकू सांप का विष
Latrodectus mactans	मकड़ी
Limulus	किंग क्रेब (बड़ा केकड़ा)
Medusa	जेलीफिश
Mephitis	स्कंक
Moschus	कस्तूरी मृग की कस्तूरी
Murex	पर्पल फिश
Mygale lasiodora	क्यूबा की बड़ी काली मकड़ी
Naja tripudians	कोब्रा सांप का विष
Oleum aniale	प्राणियों का तेल
Oleum jecoris aselli	कोड लीवर तेल
Oniscus asellus	वुड लाउस कानखजूरे
Pulex irritans	सामान्य पिस्सू
Robina	पीली टिड्डी (शलभ)
Sepia	कटलफिश
Serum anguillar	ईल मछली का सीरम
Spongia	सामान्य स्पंज (पानिसोख)
Tarantula cubensis	क्यूबा की मकड़ी
Tarantula hispania	स्पेनिश मकड़ी
Thyroidinum	भेड़ या बछड़े की थायराइड ग्रंथि
Vespa	ततैया
Vipera	जर्मन वाइपर सांप का विष

जैन व्हीगन व्यंजन

इस स्तंभ के अंतर्गत जैन व्हीगन व्यंजन बनाने की विधि प्रस्तुत है। यदि आप भी कोई रेसिपी भेजना चाहते हैं, तो पत्र/ई-मेल के द्वारा भेजें। व्हीगन से हमारा तात्पर्य यकहै कि शाकाहारी लोगों की ऐसी श्रेणी, जोकि खाने-पीने में प्राणिज पदार्थ से बनी किसी भी वस्तु के प्रयोग से दूर रहते हैं। निम्नदर्शित व्यंजन आपकी प्रतिरक्षा (इम्यूनिटी) सिस्टम को न केवल बढ़ावा देती हैं, आरोग्यप्रद और स्वादिष्ट भी हैं।

उड़द दाल

उड़द, मुंग और तुवर, ये तीनों दलहन भारत में सर्वाधिक प्रचलित दलहन हैं, क्योंकि, ये तीनों आरोग्य के मामले में सर्वाधिक लाभदायी हैं। उड़द दाल एक ऐसा खाद्य पदार्थ है, जिसमें उच्च मात्रा में कैल्सियम पाया जाता है। 100 ग्राम उड़द दाल में 154 मिलिग्राम कैल्सियम पाया जाता है। इसके अतिरिक्त, उड़द दाल में ओमेगा- 3 से लेकर ओमेगा - 6 का अनुपात सर्वाधिक होता है, अत: हृदय के लिये लाभप्रद है।

उड़द दाल खाने के अन्य लाभों में ऊर्जा और हड्डी के खनिज घनत्व में वृद्धि होना है। यह मधुमेह एवं डाईयुरेटिक (मूत्रवर्धक समस्या) रोगों में लाभकारी है। इसके सेवन से घाव में होने वाली पीड़ा, सूजन और घाव भरने की प्रक्रिया को तेज बनाती है। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि इसका सेवन शारीर में पोषक तत्त्वों के अवशोषण में सहायक होता है। पोषणक्षमता के हिसाब से मैदे से बनी जलेबी की अपेक्षा उड़द दाल से बनी इमरती अधिक पोषणक्षम है।

इमरती (10 नग)

सामग्री

1 कप स्प्लिट काला बंगाली चना/बिना छिलके की उड़द दाल

1/4 कप चावल

नारंगी या लाल रंग

5 कप शक्कर

1 चुटकी केसर

6 बूंद रोज़ एसंस

1 छोटा चम्मच इलायची पाउडर

तलने के लिये तेल

बनाने की विधि

दाल और चावल को एक घंटे के लिये भिगो कर रखें।

बाद में पानी बहा दें और दोनों को 1 कप पानी के साथ मिलाकर पिसें।

शक्कर को 2 1/2 (ढाई) कप पानी में उबालें।

केसर, रोज़ एसंस और इलायची पाउडर मिलाकर गर्म चाशनी बनाकर तैयार रखें।

तेल को गर्म करें और बेटर (घोल) को इमरती के प्रेस में दबाकर उचित आकार बनाते हुए तलें।

इमरती को चाशनी में पर्याप्त फूलने तक डुबोये रखें।

गर्म परोसें।

बी डब्ल्यू सी द्वारा जांचे-परखे व आस्वाद किये गए स्वादिष्ट व्यंजनों की विधि का संकलन देखने के लिए कृपया *www.bwcindia.org/Web/Recipes/Recipesindex.html* की मुलाकात लें।

प्रकाशक: डायना रत्नागर,
अध्यक्षा, ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
सम्पादक: भरत कापडीआ
डिझाईन: दिनेश दाभोळकर
मुद्रण स्थल: श्री मुद्रा,
181 शुक्रवार पेठ, पुणे 411 002

करुणा-मित्र
का प्रकाशनाधिकार
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी के पास सुरक्षित है।
प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना
किसी भी प्रकार से किसी भी मुद्रित सामग्री
की अनधिकृत प्रतिकृति करना प्रतिबंधित है।

करुणा-मित्र प्राणिज पदार्थ-रहित कागज़
पर मुद्रित किया जाता है,
और प्रत्येक
बसंत (फरवरी), ग्रीष्म (मई),
वर्षा (अगस्त) एवं शिशिर (नवम्बर)
में प्रकाशित किया जाता है।

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
4 प्रिन्स ऑफ वेल्स ड्राइव, वानवडी, पुणे 411 040
+91(20) 2686 1166 **+91 74101 26541**
admin@bwcindia.org **bwcindia.org**

Scan me

निजी प्रचलन हेतु Reg. No. 022203/30/86/AL/TC